पाठ 11: यतींद्र मिश्र (नौबतखाने में इबादत)

पाठ का सार (Summary):
यह पाठ भारत रत्न से सम्मानित विश्व-प्रसिद्ध शहनाई वादक **उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ** के जीवन और संगीत-साधना पर आधारित एक व्यक्तिचित्र (Biographical sketch) है। उनका जन्म बिहार के 'डुमराँव' में हुआ था, लेकिन उनके संगीत का विकास काशी (बनारस) में हुआ। वे एक सच्चे मुसलमान थे और पाँचों वक़्त की नमाज़ पढ़ते थे, फिर भी बाबा विश्वनाथ और बालाजी के मंदिर में पूरी श्रद्धा के साथ शहनाई बजाते थे। यह उनकी हिंदू-मुस्लिम एकता (गंगा-जमुनी तहज़ीब) का बड़ा प्रमाण है। अस्सी वर्ष की उम्र में भी उनमें घमंड नहीं था; वे अल्लाह से हमेशा 'सच्चे सुर' की ही माँग करते थे। उनके लिए उनका संगीत ही उनकी इबादत (पूजा) थी।

प्रश्न-अभ्यास (NCERT Solutions)

प्रश्न 1. शहनाई की दुनिया में डुमराँव को क्यों याद किया जाता है?

शहनाई की दुनिया में डुमराँव (बिहार का एक गाँव) को दो मुख्य कारणों से याद किया जाता है:

1. **नरकट घास:** शहनाई बजाने के लिए 'रीड' (Reed) का प्रयोग होता है जो अंदर से पोली (खाली) होती है। यह रीड 'नरकट' नामक एक विशेष घास से बनाई जाती है, जो डुमराँव में सोन नदी के किनारों पर बहुतायत में पाई जाती है।

2. **बिस्मिल्ला खाँ का जन्मस्थान:** विश्व-प्रसिद्ध शहनाई वादक उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ का जन्म इसी डुमराँव गाँव में हुआ था।

प्रश्न 2. बिस्मिल्ला खाँ को शहनाई की मंगलध्वनि का नायक क्यों कहा गया है?

शहनाई एक मंगल वाद्य है जिसे विवाह, त्योहारों, और शुभ अवसरों (मांगलिक कार्यों) पर बजाया जाता है। उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ ने शहनाई वादन को एक नई ऊँचाई दी और इसे शास्त्रीय संगीत के स्तर तक पहुँचाया। उनके जैसा मधुर और जादुई शहनाई वादक पूरे भारत में कोई और नहीं हुआ। भारत की आज़ादी के समय (15 अगस्त 1947 को) लाल किले से मंगलध्वनि बजाने का गौरव भी उन्हें ही प्राप्त हुआ। इसीलिए उन्हें शहनाई की मंगलध्वनि का 'नायक' (Hero) कहा जाता है।

प्रश्न 3. सुषिर-वाद्यों से क्या अभिप्राय है? शहनाई को 'सुषिर वाद्यों में शाह' की उपाधि क्यों दी गई होगी?

सुषिर-वाद्य: ऐसे वाद्य यंत्र (Musical instruments) जिनमें छेद होते हैं और जिन्हें फूँक मारकर बजाया जाता है (जैसे बाँसुरी, शहनाई), उन्हें सुषिर-वाद्य कहा जाता है।

'शाह' की उपाधि: शहनाई की आवाज़ अन्य सभी सुषिर-वाद्यों की तुलना में सबसे अधिक मधुर, सुरीली और प्रभावशाली होती है। यह शुभ अवसरों पर खुशी और मंगल का प्रतीक है। अन्य सभी फूँक कर बजाए जाने वाले वाद्यों में इसका स्थान सबसे ऊँचा (सर्वश्रेष्ठ) है, इसीलिए शहनाई को सुषिर-वाद्यों में 'शाह' (राजा/सरताज) की उपाधि दी गई है।

प्रश्न 4. आशय स्पष्ट कीजिए- "फटा सुर न बख्शें। लुंगिया का क्या है, आज फटी है, तो कल सी जाएगी।"

आशय: एक बार खाँ साहब की शिष्या ने उन्हें फटी हुई लुंगी (तहमद) पहने देखा और टोका कि वे भारत रत्न हैं, उन्हें फटे कपड़े नहीं पहनने चाहिए। इस पर खाँ साहब ने कहा कि फटे कपड़ों (लुंगी) से कोई फर्क नहीं पड़ता, वह तो सिल जाएगी। लेकिन अगर एक बार उनका 'सुर' फट गया (यानी संगीत का स्वर बिगड़ गया), तो वह दोबारा ठीक नहीं हो सकता। उनके लिए कपड़ों का दिखावा महत्त्वपूर्ण नहीं था, बल्कि उनके जीवन का असली खजाना और सम्मान उनका 'सच्चा सुर' था, जिसे वे अल्लाह से माँगते थे।

प्रश्न 5. काशी में हो रहे कौन-से परिवर्तन बिस्मिल्ला खाँ को व्यथित करते थे?

बिस्मिल्ला खाँ पुरानी काशी के सांस्कृतिक पतन से अत्यंत व्यथित (दुःखी) थे। उन्हें यह देखकर दुःख होता था कि:

1. काशी में अब पहले जैसी संगीत और कला की कद्र नहीं रही। गायकों के प्रति पहले जैसा सम्मान ख़त्म हो गया।

2. मलाई बरफ़, जलेबी और कचौड़ी बेचने वाले अब धीरे-धीरे गायब हो रहे थे और देसी घी की मिठाइयों का स्वाद भी बदल गया था।

3. हिंदू-मुस्लिम भाईचारे (गंगा-जमुनी तहज़ीब) में कमी आ रही थी और मेल-मिलाप कम हो रहा था।

प्रश्न 6. **पाठ में आए किन प्रसंगों के आधार पर आप कह सकते हैं कि-**
(क) बिस्मिल्ला खाँ मिली-जुली संस्कृति के प्रतीक थे।
(ख) वे वास्तविक अर्थों में एक सच्चे इंसान थे।

(क) मिली-जुली संस्कृति (Hindu-Muslim Unity) के प्रतीक: बिस्मिल्ला खाँ एक पक्के मुसलमान थे जो पाँचों वक़्त नमाज़ पढ़ते थे और मुहर्रम पूरे शोक के साथ मनाते थे। लेकिन इसके साथ ही उनकी काशी विश्वनाथ और संकटमोचन (बालाजी) के मंदिर में अटूट श्रद्धा थी। वे रोज़ बालाजी के मंदिर की दिशा में मुँह करके शहनाई बजाते थे। यह दोनों धर्मों का अद्भुत संगम था।

(ख) एक सच्चे इंसान: वे 'भारत रत्न' जैसी सर्वोच्च उपाधि पाने के बाद भी अत्यंत सरल और सादे इंसान थे। उनमें कोई घमंड नहीं था। वे फटी लुंगी पहनने में भी शर्मिंदा नहीं होते थे। उनके लिए इंसानियत और सच्चा सुर ही सबसे बड़ा धर्म था।

प्रश्न 7. **बिस्मिल्ला खाँ के व्यक्तित्व की कौन-कौन सी विशेषताओं ने आपको प्रभावित किया?**

बिस्मिल्ला खाँ के व्यक्तित्व की निम्नलिखित विशेषताओं ने हमें गहराई से प्रभावित किया:

1. **सादगी:** इतने महान और विश्व-प्रसिद्ध कलाकार होने के बावजूद वे दिखावे से दूर, अत्यंत सादा जीवन जीते थे।

2. **ईश्वर और कला के प्रति समर्पण:** अस्सी साल की उम्र में भी वे संगीत को सीखने वाला (विद्यार्थी) ही मानते थे और अल्लाह से 'सच्चे सुर' की ही माँग करते थे।

3. **धर्मनिरपेक्षता (Secularism):** उन्होंने धर्म के नाम पर कभी भेदभाव नहीं किया; वे मज़हब और संगीत दोनों का समान आदर करते थे।